भजन

मेहरबानी से तेरी, मेरी झोली है भरी
मुझे तेरा प्यार मिला,तेरा दरबार मिला
मैं अब तेरे रंग में रंगी

1–सतगुरू बन कर सुरता मेरी, माया से है फिराई
बेशक इलम से किया उजाला, राह वतन की दिखाई
मेहर तेरी,कोट गुनी बढ़ती रहे

2–ओ पिया तेरा इश्क बड़ा,अब मैंने समझा ये
जो दिल में ये तेरे छुपा,दिल की बात बताई
हुकम से रूह ने खेल ये देखा,ऐसी लीला रचाई

3–खिलवत अपनी जाहेर करके,मारफत भी समझाई
दिल रूहों के जाग्रत हो गए,इश्क की लज्जत पाई
अनहोनी हकें करी,ऐसी हिकमत दिखाई